# आचार्य वावननन्दि मुनि

**जीवन-परिचय :** वावननन्दि मुनि के जीवन-परिचय में कुछ भी ज्ञात नहीं है। यह तमिल व्याकरण तोलकपियम्, अगतियम् तथा अविनयम् नामक व्याकरण ग्रन्थों के ज्ञाता थे। साथ ही संस्कृत जैनेन्द्र-व्याकरण में भी प्रवीण थे।

जैनेन्द्र व्याकरण के ज्ञाता होने के कारण इनका समय पूज्यपाद के बाद होना चाहिये। अर्थात् ये ईसा की सातवीं शताब्दी के विद्वान हैं।

**रचना-परिचय :** इन्होंने व्याकरण-ग्रन्थ की रचना की है—

**1. नन्नू लू :** इन्होंने शिव गंग नाम के सामन्त के अनुरोध पर 'नन्नू लू' नाम की व्याकरण की रचना की थी। यह ग्रन्थ सबसे अधिक प्रचलित है। इस ग्रन्थ पर अनेक टीकाएँ हैं। उनमें मुख्य टीका मल्लिनाथ की है। यह ग्रन्थ स्कूल और कॉलेजों में पाठ्यक्रम के रूप में निर्धारित है।